भा वा अ शि प - वन उत्पादकता संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

दिनांक 29-03-2023

आजादी का अमृत महोत्सव के अर्न्तगत

राष्ट्र निर्माण में आदिवासी समुदायों का योगदान

भावाअशिप -वन उत्पादक्ता संस्थान, राँची द्वारा आजादी का अमृत सहोत्सव के अर्न्तगत दिनांक 29-03-2023 को राष्ट्रनिर्माण में आदिवासी समुदायों का योगदान विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

श्री करम सिंह मुण्डा के संचालन में कार्यक्रम परिचयोपरांत निदेशक, Chair of Excellence श्री एच. एस. गुप्ता, मुख्य अतिथि डॉ० प्रभावति बोदरा, उप वन संरक्षक श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की एवं सुश्री स्वाति सोरेन ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की सफलता की कामना की।

श्रीमती अंजना सुचिता र्तिकी ने मुख्य अतिथि, निदेशक एवं गणमान्यों का स्वागत करते हुए आज के कार्यक्रम के उद्देश्यों को संक्षिप्त में रखा। अपनी बात रखते हुए उन्होंने कहा कि आदिवासी समुदायों की अनूठी संस्कृति, वेशभूसा, खान पान, लोक-गीत एवं सादा जीवन उनकी पहचान रही है। राष्ट्र निर्माण में भगवान बिरसा मुण्डा के "उलगुलान" से सम्पूर्ण देश परिचित है। खेल या वन संरक्षण, सभी क्षेत्रों में आदिवासी विचारधार आज के परिपेक्ष्य में सार्थक है।

इस अवसर रिसोर्स पर्सन के रूप डॉ० प्रभावति बोदरा, प्रोफेसर(सेवानिवृत्त), प्रभाग प्रमुख, जीवविज्ञान संकाय, सिध्दो-कान्हो विश्वविद्यालय, दुमका, झारखण्ड एवं सुश्री स्वाति सोरेन, अनुसन्धान अध्येता, मानव शास्त्र एवं जनजातीय अध्यन विभाग, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, झारखण्ड इस सभा में उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि एवं रिसोर्स पर्सन डॉ० प्रभावति बोदरा ने राष्ट्र निर्माण के लिए आदिवासी समुदायों के योगदान के विषय में विस्तार से चर्चा किया। सन् 1784 से स्वतंत्रता प्राप्ति तक जनजाति समुदायों व्दारा आजादी प्राप्ति के लिए संघर्ष कर अपनी कुर्बानी देने वाले शहीदों की चर्चा करते हुए उन्होने आशा व्यक्त की कि तिलका मांझी को प्रथम शहीद का दर्जा मिलना चाहिए। दबे कुचले, कमजोर, असंगठित आदिवासियों ने सशक्त अंग्रेजों को सोचने पर मजबूर कर दिया कि वे आदिवासियों के विद्रोह को हल्के में नहीं ले सकते। सिध्दो-कान्हो ने अपने 4 भाई-बहनों के साथ स्वतंत्रता की वेदी पर अपनी जान की आहुति दी। संथाल विद्रोह, मुण्डा विद्रोह, तेलंगा खड़िया विद्रोह आदि के बारे में विस्तार बताया। डॉ० प्रभावती बोदरा ने विस्तार पूर्वक झारखण्ड के आदिवासी समुदायों के अंग्रेजी हुकूमत के विरूद्ध संघर्षों की चर्चा किया। उन्होंने कहा कि ब्रिटेन जिसके विषय में कहा जाता था कि उसका सूर्य कभी अस्त नही होता ऐसे शक्तिसंपन्न राष्ट्र के समक्ष जंगल-झाड़ में रहने वाले आदिवासी समाज के लोगों ने सन् 1857 के पूर्व ही संघर्ष का बिगुल बजा दिया था। झारखण्ड के बाबा तिलका माँझी का संघर्ष, हो विद्रोह, मुण्डा विद्रोह, सिद्धो-कान्हों विद्रोह आदि के विषय में तफसील से चर्चा किया तथा इन संघर्षों के स्थानीय प्रशासनिक परिणामों की चर्चा किया।

सुश्री स्वाति सोरेन ने विभिन्न समुदायों के साथ आदिवासियों के अमूल्य योगदान के विषय में बताया। उन्होने प्रधान मंत्री के द्वारा घोषित जनजातीय गौरव दिवस की चर्चा करते हुए इस दिन आदिवासी समुदायों के योगदान पर चर्चा करने का मौका देने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि आदिवासी विद्रोह में समानता देखी गई। सुश्री सोरेन ने कहा कि चूँकि ये समुदाय समाज की मुख्य धारा से पृथक आवासरत रहते थे उनके संघर्षों को आजादी के शेष संघर्षों के साथ पाठ्य पुस्तकों में स्थान नहीं मिला। जनजातीय शोध संस्थान (TRI), राँची व्दारा आदिवासी स्वतंत्रता आंदोलनकारियों पर चल रहे परियोजनाओं का भी चर्चा किया।

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

Chair Of Excellence डॉ० एच. एस. गुप्ता ने बताया कि आदिवासियों के बिना देश का विकास संभव नहीं है। उनके विद्रोह के कारण ही कई कानून बनाये गये जिनमें विल्किन्सन रूल , Tenancy Acts उन्हीं के आंदोलन का परिणाम था।

निदेशक डा० योगेश्वर मिश्रा ने आज के इस ऐतिहासिक विषय पर चर्चा के लिए डॉ० बोदरा एवं स्वाति सोरेन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आदिवासियों के असंगठित होने के बावजूद भी अंग्रेजों को अपने विद्रोहों से स्पष्ट कर दिया कि इन समुदायों को हल्के में नहीं लिया जा सकता। जल-जंगल-जमीन से अपने को जोड़ कर रखने वाले आदिवासियों का कुल आबादी का 8.6% आबादी देश के अर्थव्यवस्था एवं राष्ट्र निर्माण मे बड़ी भूमिका रखती है। आदिवासियों ने अपनी परंपरा को बचाए रखा एवं अपने विरासत को संजोने का काम किया।

Sustainable Development Goals (SDGs) जैसे- Water conservation, Climate Change, Land degradation के क्षेत्र में इनकी जीवन शैली एवं विचारधारा का बड़ा योगदान है। उन्होंने AICRP परियोजना, Mission LiFE की भी चर्चा की तथा संविधान में वर्णित आदिवासियों के लिए प्रावधानों की भी चर्चा की।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए उप वन संरक्षक श्रीमति अंजना सुचिता तिर्की ने प्रकृति के संरक्षक, उलगुलान के नायक, राष्ट्र निर्माण में योगदान करने वाले आदिवासी वीर सपूतों को याद करने में सहयोग करने के लिए डॉ० बोदरा, सुश्री स्वाति, डॉ० एच. एस. गुप्ता एवं प्रेरणा स्रोत निदेशक, वन उत्पादकता संस्थान का धन्यवाद करते हुए उपस्थित सभी कर्मचारियों का भी धन्यवाद किया एवं कार्यक्रम समापन की घोषणा की।

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां